Notes

ज्ञान के पक्ष :

CAspects of Knowledge)

ज्ञान को मानव जीवन एवं विद्यार्थी के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया गया आज का का प्रत्येक बुद्धिजीवी वर्ग का व्यक्ति ज्ञान प्राप्ति हेतु प्रयास रत हैं। ज्ञान प्राप्ति हेतु किया गया प्रयास मानव को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप सें लाभ पहुंचाता है। ज्ञान मानव जीवन को विकासित करनें, समाज को उन्नत करने तथा राष्ट्र के विकास की ओर अग्रासित करने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाता हैं।

ज्ञान के पक्षो ज्ञान के कार्यो के रूप में निम्नलिखित प्रकार सें ~~[illegible]~~ प्रयास किया जाता हैं।

1- ज्ञान के व्यक्ति सम्बन्धी पक्ष
2- ज्ञान के समाज सम्बन्धी पक्ष
3- ज्ञान के राष्ट्र सम्बन्धी पक्ष
4. ज्ञान के वातावरण सम्बन्धी पक्ष.

1- ज्ञान के व्यक्ति सम्बन्धी पक्ष

Individual Related Aspects of Knowledge

व्यक्ति से आशय छात्र, शिक्षक एवं सभी समान्य व्यक्तियों से है। जिसके विकास के ज्ञान द्वारा किया जाते हैं।

1- अतिरिक्त शक्तियों का विकास — ज्ञान का प्रमुख कार्य छात्रो की में छिपी अनेक प्रकार की आन्तरिक प्रतिभाओं का विकास करना जिसके द्वारा स्वयं छात्र का, समाज एवं राष्ट्र का भला हो सकता हैं।

Notes

नियमों का निर्धारित किया जाता हैं, इन नियमों को प्रभाव विद्यालय पर भी स्पष्ट स्वरूप से होता है। ज्ञान के माध्यम बालक सामाजिक नियमों को समाज तथा विद्यालय दो में रहकर सीखता हैं।

② प्राचीन साहित्य सम्बन्धी कार्य :— ज्ञान के माध्यम प्राचीन साहित्य का अध्ययन किया जा सकता हैं तथा उसके संरक्षण में सहायता की जा सकती है। प्राचीन ज्ञान के संरक्षण में कौशलात्मक ज्ञान का उपयोग होता हैं। प्राचीन समय में साहित्य हस्तलेखन द्वारा ही सम्भव होता था उसके वर्तमान समय तक सुरक्षित रखने मे ज्ञान की ही भूमिका

③ सामाजिक कुरीतियो के समापन सम्बन्धी कार्य —
सामाजिक कुरीतियो के समापन सम्बन्धी कार्य भी ज्ञान का प्रमुख कार्य हैं। वर्तमान समाज मे स्वच्छ परम्पराओं के विकास तथा सामाजिक कुरीतियो के समापन का श्रेय ज्ञान को ही जाता हैं। ज्ञान के माध्यम से जैसे- छात्रो को सही तथा गलत तथ्यो की जानकारी का विकास होता हैं।
जैसे- दहेज प्रथा का समापन, विधवा विवाह को मान्यता मिलना। ज्ञान के समाज ~~सम्बन्धित~~ सुधार सम्बन्ध कार्यो से सम्बन्धित हैं।

④ समाज सुधार सम्बन्धी कार्य ज्ञान का प्रमुख कार्य सामाजिक सुधार करना
मानव की प्राचीन व्यवस्था जीवन स्तर तथा वर्तमान जीवन स्तर की तुलना की जायें तो दोनो पर्याप्त अन्तर पाये जाते है। आज जीवन सम्पूर्ण सुख सुविधाओं से युक्त है

Notes

जैसे पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाएँ एवं खेल आदि।

आवश्यकता पूर्ति सम्बन्धी कार्य — ज्ञान का प्रमुख कार्य मानव तथा समाज की आवश्यकता की पूर्ति करना प्रत्येक व्यक्ति समाज मे ज्ञान के माध्यम से अपनी आवश्यकता- की पूर्ति ~~करता~~ के साथ- साथ समाज की आवश्यकता पूर्ति का कार्य भी करता हैं।

जैसे एक शिक्षक शिक्षण कला मे प्रवीण है। इससे वह अपनी जीविकोपार्जन के लिए धन प्राप्त करता हैं। तथा कला की माध्यम सें छात्रो को शिक्षण करता हैं।

रोजगार सम्बन्धी कार्य — ज्ञान के माध्यम से

Scanned with CamScanner

Notes

जैसे- संगीत की प्रतिभा, नृत्य की प्रतिभा एवं वाद विवाद की प्रतिभा आदि।

२- व्यक्ति सम्बन्धी कार्य :- छात्र के व्यक्तित्व के निर्माण में विद्यालयी व्यवस्था सम्बन्धी तथ्यों को महत्वपूर्ण भूमिका होती है। विद्यालय में कोशलात्मक परिचयात्मक ज्ञान के माध्यम से छात्रों के विकास का मार्ग प्रशस्त होता है।

३- भावी जीवन सम्बन्धी कार्य - अपने भावी जीवन को उच्च एवं सुखद बनाने के लिए ज्ञान को प्राप्त होना अति आवश्यक है। ज्ञान प्राप्त करने से भावी जीवन सुखद हो सकता है ~~जैसे~~ -

४- नैतिकता के विकास सम्बन्धी कार्य :- छात्रों में नैतिकता के विकास सम्बन्धी कार्यों को परिचयात्मक ज्ञान एवं तथ्यात्मक ज्ञान द्वारा सम्पन्न किया जाता है। जब कोई छात्र विद्यालय में अपने शिक्षक एवं अन्य छात्रों को किसी दूसरे छात्र या व्यक्ति की सहायता करते हुए देखता है। तथा सत्य आचरण करते हैं तो उसमें नैतिकता की भावना का विकास होता है।

मानवीय गुणों के विकास सम्बन्धी कार्य :- ज्ञान के द्वारा छात्रों में मानवीय गुणों का विकास सम्भव होता है। इस कार्य में भी प्रमुख रूप से तथ्यात्मक ज्ञान एवं परिचयात्मक ज्ञान का सहयोग होता है। छात्र विद्यालय में अनेक प्रकार की क्रियाओं को समूह में रहकर करता है।

Scanned with CamScanner

Notes

अधिकार एवं कर्तव्य कर्तव्य सम्बन्धी जानकारी

ज्ञान को अधिकार एवं कर्तव्य के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान करना तथा उनके भिन्न को श्रेय ज्ञान को ही जाता है। ~~कर्तव्य के सम्बन्ध~~ में जैसे - भारतीय संविधान का निर्माण हुआ तक अन्य देशो के संविधान का अध्ययन करने पश्चात विद्वानो द्वारा तक तथ्य स्वीकार किया गया कि नागरिको के लिए अधिकार एवं कर्तव्य दोनों की ही व्यवस्था होनी चाहिए।

ज्ञान एवं सूचना में अन्तर :-

ज्ञान -① ज्ञान के अन्तर्गत आँकड़े एवं सत्य सूचनाओं को समावेश होता है। इस लिए ज्ञान असत्यता को किसी प्रकार की सम्भावना नही होती

② किसी भी स्त्रोत से कुछ सीखना। समझना ज्ञान लेना है।

3- आज युग में किसी को ज्ञान की प्राप्ति करके स्वयं के मानसिक स्तर पर निर्भर करता है।

~~किताबो में सिर्फ सूचनाएँ भरी है~~

... से उन्हें समझने में आसानी

भारत के भाग्य का निर्माण होता है। अतः ज्ञान के द्वारा छात्रों में नागरिकता सम्बन्धी गुणों का विकास किया जाता है। जिससे भावी जीवन में वे अपने राष्ट्र के विकास में अपना योगदान प्रस्तुत कर सकें।

राष्ट्रीय विकास सम्बन्धी कार्य :- राष्ट्रीय विकास में ज्ञान का महत्वपूर्ण योगदान होता है। इस कार्य में कौशलात्मक ज्ञान का विकास किया जाता है। विद्यालय में छात्रों को विभिन्न प्रकार कौशल से सम्बन्धित तकनीकी शिक्षा प्रदान की जाती है। यह तकनीकी शिक्षा को प्राप्त करने छात्र को कुशल इन्जीनियर बनते है। जो देश के विकास में अपना सहयोग प्राप्त करते है।

सार्वजानिक हित सम्बन्धी कार्य :— सार्वजानिक हित सम्बन्धी कार्यों को प्रोत्साहन और उसको सम्पन्न करने ज्ञान की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बालक स्वभाविक रूप से आत्म केन्द्रित होता है। वह अपने हित के अतिरिक्त दूसरे के हित में कम विचार करता है। विद्यालय में प्रवेश एवं सामाजिक वातावरण के माध्यम से वह सीख जाता है।

① राष्ट्रीय अनुशासन सम्बन्धी कार्य :— अनुशासन के बिना न तो परिवार चल सकता न ही समाज और राष्ट्र इसकी व्यापकता का अंदाजा इससे भी लगाया जा सकता है। कि अनुशासन ~~सम्बन्ध~~ शब्द समाज की सबसे छोटी इकाई परिवार से लेकर विश्व समाज की अवधारणा तक अपने विभिन्न अर्थों के साथ किसी न किसी रूप से जुड़ा होता है।

Scanned with CamScanner

Notes

समाज पर बाल विवाहों पर रोक लगाना, महिलाओं को अनिवार्य शिक्षा प्रदान करना, तथा महिलाओं को नौकरी का आरक्षण प्रदान करना, समाज सुधार सम्बन्धी प्रमुख कार्य है।

ज्ञान के राष्ट्र सम्बन्धी पक्ष

ज्ञान का राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान होता है। जिस राष्ट्र के नागरिक ज्ञान एवं शिक्षा के क्षेत्र में प्रवीण होते हैं उस राष्ट्र का सर्वांगीण विकास पूर्णतः सम्भव होता है। इसके विपरीत ज्ञान एवं शिक्षा में जिस राष्ट्र के नागरिक पिछड़े हुए होते हैं। उसका विकास सम्भव नहीं होता है।

भावात्मक एकता सम्बन्धी कार्य :- ज्ञान के माध्यम से छात्र एवं समाज भावात्मक एकता का विकास होता है। जब छात्र विद्यालय में जाता है। तो उसका विभिन्न प्रकार से क्रिया कलापों को समूह